Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सिरोही अंचल के उपेक्षित जैन मंदिर स्थल और उनका पुरातात्विक संरक्षण: एक स्रोत-आधारित अध्ययन: स्थल-सूची, स्थापत्य साक्ष्य, जोखिम और संरक्षण-रणनीति

डॉ. सीमा चारण,
सहायक आचार्य, संघवी मातुश्री पूरीबाई भूरमल जैन राजकीय महाविद्यालय शिवगंज, सिरोही

सारांश
सिरोही अंचल पश्चिमी राजस्थान के उन सांस्कृतिक भू-दृश्यों में है जहाँ जैन धर्म, व्यापारिक मार्गों, राजकीय संरक्षण और मारू-गुर्जर स्थापत्य परम्परा ने दीर्घकालिक अंतःक्रिया विकसित की। माउंट आबू का देलवाड़ा मंदिर-समूह इस विरासत का सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है, परन्तु इसके समानांतर अनेक छोटे, कम-प्रसिद्ध, पुनर्निर्मित, अवशेषात्मक अथवा सीमित रूप से प्रलेखित जैन मंदिर स्थल भी विद्यमान हैं। यह शोध-पत्र इन्हीं स्थलों को 'उपेक्षित' कहने के लिए एक सावधान कार्यपरिभाषा अपनाता है—अर्थात् ऐसे स्थल जिनकी सार्वजनिक दृश्यता, पुरातात्त्विक व्याख्या या संरक्षण-प्रलेखन प्रमुख तीर्थ-स्थलों की तुलना में सीमित है; इसे स्वतः भौतिक जर्जरता का प्रमाण नहीं माना गया है। अध्ययन IGNCA के सिरोही पुरातात्त्विक स्थल अभिलेख, राजस्थान सरकार के देवस्थान अभिलेख, चन्द्रावती के उत्खनन-साहित्य तथा जैन मंदिर स्थापत्य पर उपलब्ध सहकर्मी-समीक्षित शोध पर आधारित है। चयनित स्थलों में चन्द्रावती के जैन अवशेष, बामनुसर के विमलनाथ एवं उपसरग मंदिर, अबू तलहटी का आदेश्वर मंदिर तथा IGNCA में सूचीबद्ध अन्य जैन मंदिर शामिल हैं। अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष यह है कि संरक्षण की सबसे बड़ी समस्या केवल संरचना की मरम्मत नहीं, बल्कि स्थल-स्तरीय पहचान, डिजिटल दस्तावेजीकरण, स्वामित्व/संरक्षण स्थिति की स्पष्टता, स्थानीय समुदाय की भागीदारी और नियमित निगरानी के बीच समन्वय का अभाव है। इसलिए यह शोध एक 'दस्तावेजीकरण → जोखिम-मूल्यांकन → न्यूनतम हस्तक्षेप → स्थानीय प्रबंधन → डिजिटल निगरानी' मॉडल प्रस्तावित करता है।

मुख्य शब्द- सिरोही, जैन मंदिर, चन्द्रावती, देलवाड़ा, मारू-गुर्जर स्थापत्य, पुरातात्त्विक संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत, डिजिटल अभिलेखीकरण, जोखिम-मानचित्रण, विरासत प्रबंधन

प्रस्तावना

राजस्थान की जैन स्थापत्य परम्परा को सामान्यतः देलवाड़ा, रणकपुर, जैसलमेर अथवा ओसियां जैसे प्रसिद्ध स्मारकों के माध्यम से समझाया जाता है। यह दृष्टिकोण स्थापत्य की उत्कृष्ट उपलब्धियों को सामने लाता है, लेकिन इससे छोटे और कम दृश्यता वाले स्थलों की ऐतिहासिक भूमिका पीछे छूट सकती है। सिरोही क्षेत्र इस समस्या का विशेष उदाहरण है। IGNCA की सिरोही पुरातात्त्विक सूची में देलवाड़ा के अतिरिक्त आदेश्वर, आदिनाथ, कुन्थुनाथ, महावीर स्वामी, ऋषभदेव, शांतिनाथ, चन्द्रकौशिक, पद्मावती-पार्श्वनाथ, शंखेश्वर-पार्श्वनाथ, उपसरग और विमलनाथ जैसे अनेक जैन मंदिर/स्थल दर्ज हैं। यह सूची स्वयं

संकेत करती है कि सिरोही की जैन विरासत एकल स्मारक नहीं, बल्कि बहु-स्थलीय सांस्कृतिक परिदृश्य है।

सिरोही और आबू का जैन इतिहास मध्यकालीन पश्चिमी भारत की व्यापक आर्थिक-सांस्कृतिक गतिशीलता से जुड़ा है। जैन मंदिर स्थापत्य के अध्ययन में मारू-गुर्जर शैली की विशेषताओं—बहु-प्रक्षेपित बाहरी भित्तियाँ, अत्यंत अलंकृत स्तम्भ, मण्डप, तोरण, शिखर और जटिल छत-रचनाएँ—का विशेष महत्व है। Hegewald के अनुसार, इस शैली का विकास 10वीं–13वीं शताब्दी में उत्तर-पश्चिम भारत में हुआ और बाद की शताब्दियों में जैन पहचान तथा स्थापत्य स्मृति के पुनर्निर्माण में भी इसका प्रयोग हुआ।

चन्द्रावती इस संदर्भ में विशेष महत्त्व रखती है। उत्खननों से प्राप्त मंदिर-खंड, प्रतिमाएँ और स्थापत्य अवशेष यह संकेत देते हैं कि यह नगर जैन धार्मिक जीवन का महत्वपूर्ण केन्द्र था। उपलब्ध अध्ययन चन्द्रावती के समृद्ध चरण को लगभग 10वीं से 13वीं–14वीं शताब्दी के बीच रखता है तथा 2013–2016 के उत्खननों में प्राप्त बड़ी मात्रा में जैन-संबंधी सामग्री पर चर्चा करता है।

इस शोध का मूल प्रश्न है: जब सिरोही में जैन मंदिरों का बहु-स्थलीय समूह उपलब्ध है, तो संरक्षण विमर्श में कुछ ही स्मारक क्यों दिखाई देते हैं? दूसरा प्रश्न है कि उपलब्ध पुरातात्त्विक/डिजिटल अभिलेखों के आधार पर कम-दृश्यता वाले मंदिरों की संरक्षण-प्राथमिकताएँ कैसे निर्धारित की जाएँ?

अध्ययन पद्धति

यह अध्ययन मूल क्षेत्र-सर्वेक्षण का दावा नहीं करता; इसे 'स्रोत-आधारित संरक्षण-अध्ययन' के रूप में निर्मित किया गया है। शोध में तीन स्तरों पर सामग्री एकत्र और तुलना की गई: (क) आधिकारिक/संस्थागत अभिलेख, (ख) पुरातात्त्विक उत्खनन और स्थापत्य-अध्ययन, तथा (ग) संरक्षण-विमर्श से जुड़े सहकर्मी-समीक्षित शोध।

1. स्रोत-आधार: IGNCA का Sirohi archaeological index और उससे जुड़े site reports; राजस्थान देवस्थान विभाग की मंदिर-प्रोफ़ाइल; चन्द्रावती उत्खनन संबंधी प्रकाशित सामग्री; जैन मंदिर स्थापत्य पर Julia A. B. Hegewald के शोध।
2. स्थल-चयन: वे स्थल चुने गए जो सिरोही क्षेत्र की जैन विरासत की विविध अवस्थाएँ दिखाते हैं—जीवित मंदिर, कम-प्रलेखित मंदिर और पुरातात्त्विक अवशेष।
3. उपेक्षा की कार्यपरिभाषा: कम सार्वजनिक दृश्यता + सीमित उपलब्ध संरक्षण-प्रलेखन + प्रमुख तीर्थ-पर्यटन के बाहर होना। इसे भौतिक क्षति का प्रत्यक्ष माप नहीं माना गया है।
4. विश्लेषण: स्थापत्य विशेषता, स्थानिक स्थिति, धार्मिक उपयोग, अभिलेखीकरण की उपलब्धता और संरक्षण-जोखिम के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण।
5. सीमा: जिन स्थलों के लिए सार्वजनिक स्रोत केवल नाम/सूची प्रदान करते हैं, उनके लिए संरचनात्मक स्थिति पर निर्णायक कथन नहीं किया गया है। ऐसे स्थलों को 'अधिक फील्ड-सर्वे की आवश्यकता' के रूप में चिन्हित किया गया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

सिरोही का जैन सांस्कृतिक परिदृश्य

सिरोही की जैन विरासत को 'तीर्थ-केन्द्र' और 'स्थानीय मंदिर नेटवर्क' दोनों स्तरों पर समझना आवश्यक है। देलवाड़ा मंदिर-समूह की प्रसिद्धि के कारण माउंट आबू वैश्विक स्तर पर जैन स्थापत्य का प्रतिनिधि स्थल बन गया है। राजस्थान सरकार के अनुसार देलवाड़ा परिसर में पाँच मंदिर हैं और इसका प्रमुख निर्माण 11वीं–13वीं शताब्दियों से जुड़ा है; देवस्थान विभाग की प्रोफ़ाइल विमल वसाही को 1031/1032 ई. से जोड़ती है और परिसर में अनेक तीर्थंकर प्रतिमाओं का उल्लेख करती है।

इसके विपरीत, IGNCA की सूची में छोटे और अपेक्षाकृत कम चर्चित जैन मंदिरों की लंबी श्रृंखला मिलती है। सूची में 'कुंथुनाथ जैन मंदिर', 'महावीर स्वामी जैन मंदिर', 'श्री चंद कौशिक जैन मंदिर', 'श्री पदमावती पार्श्व नाथ जैन मंदिर', 'श्री ऋषभ देव जैन मंदिर', 'श्री शांतिनाथ जैन मंदिर', 'उपसर्ग जैन मंदिर' और 'विमल नाथ जैन मंदिर' जैसे नाम शामिल हैं। यह तथ्य शोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि संरक्षण की पहली शर्त ही 'किस-किस विरासत को पहचानना है' का उत्तर है।

इस नेटवर्क में कुछ मंदिर जीवित धार्मिक संस्थाएँ हैं, कुछ पुनर्निर्मित/उत्तरकालीन संरचनाएँ हैं और कुछ पुरातात्त्विक अवशेष-स्थल हैं। इसलिए एक समान संरक्षण नीति सभी पर लागू करना वास्तु और धार्मिक दोनों दृष्टियों से उचित नहीं होगा। जीवित मंदिरों में पूजा-प्रक्रिया, आगंतुक-प्रवाह और स्थानीय प्रबंधन को ध्यान में रखना होगा; अवशेष-स्थलों में पुरातात्त्विक संदर्भ, सामग्री की मूल स्थिति और न्यूनतम हस्तक्षेप प्राथमिक होंगे।

- **चन्द्रावती: अवशेषों में छिपा जैन मंदिर-परिदृश्य**

(चित्र 1: चंद्रवती में संरचनात्मक अवशेष)

(चित्र 2: चंद्रवती में किले के बुर्ज के प्रमाण)

(चित्र 1,2 का स्रोत : https://www.indica.today/)

चन्द्रावती को सिरोही के जैन पुरातात्त्विक परिदृश्य की केंद्रीय कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। 2013–2016 के उत्खननों से मंदिरों के स्थापत्य खंड, मूर्तियाँ और अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए। उपलब्ध शोध के अनुसार अनेक मूर्तिकला-खंड जैन और हिन्दू मंदिरों से संबंधित हैं तथा जैन सामग्री का एक उल्लेखनीय समूह 10वीं से 13वीं–14वीं शताब्दी के समृद्ध चरण से जोड़ा गया है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

चन्द्रावती की समस्या 'जीवित मंदिर की मरम्मत' से अलग है। यहाँ संरक्षण का पहला लक्ष्य पुरातत्वीय संदर्भ (archaeological context) को सुरक्षित रखना है—किस खंड का संबंध किस मंदिर से था, उसका मूल स्थान क्या था, किस प्रकार की शिल्प-परम्परा में वह बना था, और उत्खनित सामग्री को कहाँ तथा किस शर्त पर सुरक्षित रखा जा रहा है। इस प्रकार चन्द्रावती के लिए संरक्षण का अर्थ केवल टूटे पत्थर जोड़ना नहीं, बल्कि स्थल की पुरातात्त्विक पठनीयता को बनाए रखना है।

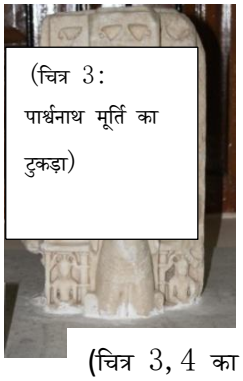

(चित्र 3: पार्श्वनाथ मूर्ति का टुकड़ा)

(चित्र 4: बैठे हुए मुद्रा में तीर्थंकर की अज्ञात छवि)

(चित्र 3, 4 का स्रोत : https://www.indica.today/)

उपलब्ध साहित्य चन्द्रावती को एक ऐसे नगर के रूप में प्रस्तुत करता है जिसकी आर्थिक और धार्मिक समृद्धि व्यापारिक नेटवर्क से जुड़ी थी। इस संदर्भ में जैन मंदिर केवल पूजा-स्थल नहीं थे; वे दान, शिल्प, यात्राओं और नगरीय पहचान के नेटवर्क का हिस्सा रहे होंगे। अतः किसी मंदिर-खंड का नष्ट होना केवल एक स्थापत्य वस्तु का नष्ट होना नहीं, बल्कि नगर के सामाजिक इतिहास की एक कड़ी का कमजोर होना है।

बामनुसर के विमलनाथ और उपसरग मंदिर

(चित्र 5:विमलनाथ जैन मंदिर, IGNCA)

(चित्र 6:उपसरग मंदिर, IGNCA)

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

IGNCA की दस्तावेजी प्रविष्टि में बामनुसर, सिरोही रोड स्थित विमलनाथ जैन मंदिर को पहाड़ी पर निर्मित मंदिर के रूप में वर्णित किया गया है। रिपोर्ट में इसे भगवान विमलनाथ को समर्पित बताया गया है और इसके मुख-मण्डप तथा महामण्डप में गुंबदाकार रूप, जबकि गर्भगृह पर वक्ररेखीय शिखर तथा अंगशिखरों का उल्लेख है। यह विवरण बताता है कि स्थानीय मंदिर भी स्थापत्य-इतिहास के लिए पर्याप्त सूचनाएँ रखते हैं।

उसी क्षेत्र के उपसरग जैन मंदिर की IGNCA प्रविष्टि इसे भगवान महावीर स्वामी को समर्पित, पहाड़ी पर स्थित और नागर शैली का मंदिर बताती है। मुख-मण्डप पर पसलीदार/रिब्ड गुंबदाकार अधिरचना और कंगूरेदार रेलिंग (parapet) का उल्लेख मिलता है। ये विवरण यह संकेत देते हैं कि सिरोही के कम-प्रसिद्ध मंदिरों में स्थानीय स्थापत्य रूप और व्यापक उत्तर-पश्चिमी नागर/मारू-गुर्जर परम्पराओं का मिश्रण दिखाई देता है।

इन दोनों स्थलों का संरक्षण-प्रश्न इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे देलवाड़ा की तरह व्यापक वैश्विक पर्यटन-व्यवस्था का केंद्र नहीं हैं। इनके लिए नियमित स्थिति का सर्वेक्षण (condition survey), 3D दस्तावेज़ीकरण (3D documentation) , ड्रेनेज मैपिंग (drainage mapping) और वनस्पति की निगरानी (vegetation monitoring) जैसी प्रक्रियाएँ सार्वजनिक स्रोतों में स्पष्ट रूप से उपलब्ध नहीं दिखतीं। अतः इन्हें 'अधिक दस्तावेजीकरण की आवश्यकता वाले स्थल' के रूप में प्राथमिकता देना तर्कसंगत है, न कि बिना क्षेत्र-सर्वे के इन्हें जर्जर घोषित करना।

अबू तलहटी का आदेश्वर जैन मंदिर

(चित्र 7: आदेश्वर मंदिर सिरोही- स्रोत: IGNCA)

IGNCA के दस्तावेज में अबू रोड के अबू तलहटी जैन तीर्थ, मनपुर स्थित आदेश्वर जैन मंदिर को एक विशाल जैन मंदिर बताया गया है। इसमें नागर शैली, अनेक वक्ररेखीय शिखर, ऊँचा चबूतरा, पत्थर की सीढ़ियाँ और बड़े वृत्ताकार गुंबदाकार मण्डप का उल्लेख है। इस तरह का दस्तावेजी वर्णन यह दर्शाता है कि 'कम प्रसिद्ध' होना स्थापत्य महत्व के कम होने के बराबर नहीं है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

आदेश्वर जैसे जीवित मंदिर के लिए संरक्षण नीति में धार्मिक उपयोग और संरचनात्मक संरक्षण का संतुलन आवश्यक है। नियमित सफाई, धूप-दीप से उत्पन्न धुआँ, जल निकासी, संगमरमर/पत्थर पर जैविक वृद्धि, विद्युत तारों और आधुनिक सुविधाओं का अनियंत्रित जोड़—ये सभी ऐसे घटक हैं जिन्हें संयुक्त विरासत प्रबंधन योजना (heritage management plan) में दर्ज किया जाना चाहिए। इस अध्ययन में इनके वर्तमान स्तर का प्रत्यक्ष निरीक्षण नहीं किया गया है; इन्हें जोखिम-आकलन के लिए सुझाए गए संकेतक माना गया है।

उपेक्षित/कम-दस्तावेजीकृत स्थलों का तुलनात्मक डेटा

नीचे दी गई तालिका में 'संरक्षण स्थिति' का अर्थ प्रत्यक्ष भौतिक सर्वेक्षण नहीं, बल्कि उपलब्ध सार्वजनिक दस्तावेजीकरण की स्थिति है। इसलिए 'अधिक अध्ययन आवश्यक' को क्षति का पर्याय नहीं माना जाना चाहिए।

क्रम	स्थल	स्थान/पहचान	उपलब्ध स्रोत	स्थापत्य/पुरातात्त्विक संकेत	उपेक्षा-संकेत	प्राथमिक संरक्षण आवश्यकता
1	चन्द्रावती जैन अवशेष	चन्द्रावती, अबू रोड क्षेत्र	उत्खनन साहित्य + IGNCA	10वीं–14वीं सदी के जैन स्थापत्य/मूर्ति-खंड	अवशेषात्मक, स्थल-पठन जटिल	खंडों का डिजिटल/स्थानिक अभिलेख, संरक्षण-भंडारण
2	विमलनाथ जैन मंदिर	बामनुसर, सिरोही रोड	IGNCA RJ/SIR-156	पहाड़ी, मुख/महामण्डप, वक्ररेखीय शिखर	सीमित सार्वजनिक शोध दृश्यता	संरचना व जल-निकासी सर्वे
3	उपसरग जैन मंदिर	बामनुसर, सिरोही रोड	IGNCA RJ/SIR-159	महावीर स्वामी; नागर शैली; गुंबदाकार मुख-मण्डप	सीमित सार्वजनिक शोध दृश्यता	3D दस्तावेजीकरण और सामग्री सर्वे
4	आदेश्वर जैन मंदिर	अबू तलहटी, मनपुर	IGNCA RJ/SIR-259	विशाल मंदिर; नागर शैली; बहु-शिखर; वृत्ताकार मण्डप	प्रमुख तीर्थों से कम दृश्यता	जीवित मंदिर प्रबंधन + संरचनात्मक निगरानी

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

5	कुन्थुनाथ जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	स्थल-पहचान और condition survey
6	चन्द्रकौशिक जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	स्थापत्य सर्वे व अभिलेखीकरण
7	पद्मावती पार्श्वनाथ जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	मूर्ति/शिलालेख सूचीकरण
8	ऋषभदेव जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	साइट रिकॉर्ड और फोटो-डॉक्यूमेंटेशन
9	शांतिनाथ जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	स्थिति-मूल्यांकन व स्वामित्व स्पष्टता
10	शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन मंदिर	सिरोही जिला	IGNCA सूची	जैन मंदिर के रूप में दर्ज	विस्तृत सार्वजनिक तकनीकी विवरण सीमित	स्थानीय संरक्षण योजना

दस्तावेजी साक्ष्य का विश्लेषण

चयनित स्थलों की तुलना से एक स्पष्ट शोध-पद्धतिगत समस्या सामने आती है: सूचीबद्ध होना और वैज्ञानिक रूप से संरक्षित होना दो अलग अवस्थाएँ हैं। IGNCA ने सिरोही में अनेक जैन मंदिरों का नाम,

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

स्थान और कुछ मामलों में स्थापत्य विवरण दर्ज किया है; परन्तु सार्वजनिक रूप से उपलब्ध स्रोतों में सभी स्थलों के लिए समान स्तर का स्थिति मूल्यांकन (condition assessment), संरक्षण इतिहास(conservation history), intervention record और वर्तमान प्रबंधन योजना (management plan) नहीं मिलता। यही 'दस्तावेज़ीकरण अंतर' ('documentation gap') संरक्षण-नीति की पहली चुनौती है।

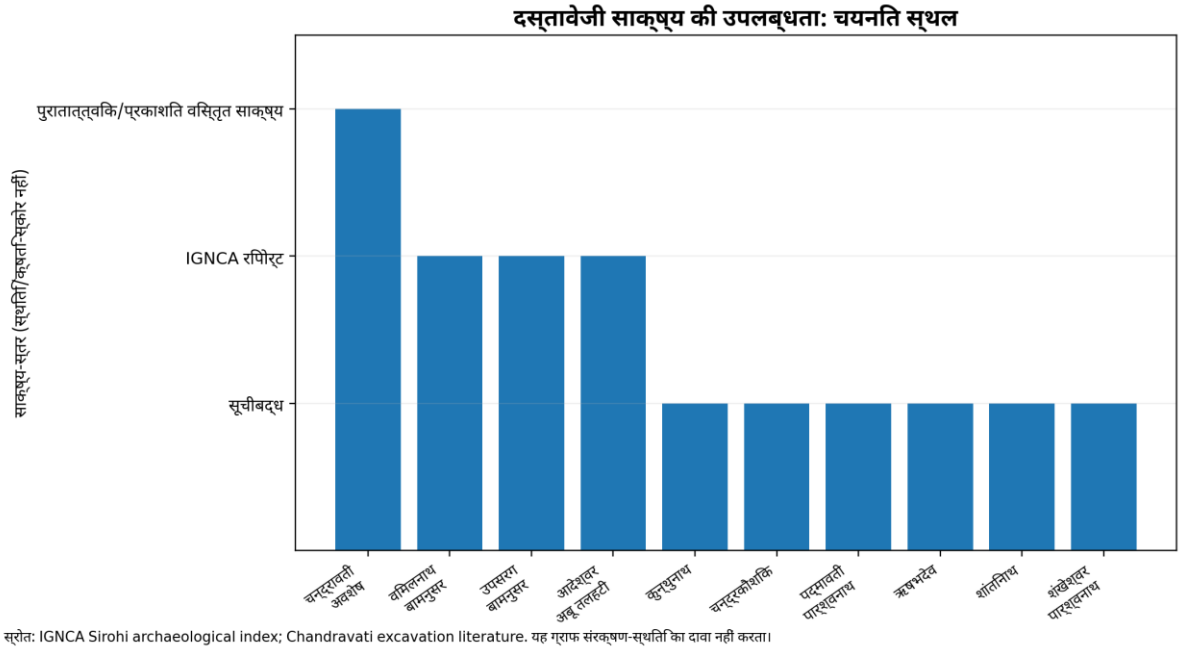

चित्र 8. उपेक्षित स्थलों में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध दस्तावेजी साक्ष्य का स्तर। यह भौतिक क्षति या संरक्षण-स्थिति का स्कोर नहीं है; केवल उपलब्ध स्रोत-गहराई का संकेतक है।

संरक्षण की प्रमुख चुनौतियाँ

- अपूर्ण/असमान दस्तावेजीकरण: अनेक मंदिर केवल नाम और छवियों के स्तर पर सार्वजनिक सूची में हैं।
- जीवित बनाम पुरातात्त्विक स्थल: जीवित मंदिरों में पूजा और आधुनिक सुविधाओं के कारण हस्तक्षेप की प्रकृति अलग होती है; अवशेष-स्थलों में पुरातात्त्विक संदर्भ अधिक महत्वपूर्ण होता है।
- पर्यावरणीय जोखिम: वर्षाजल, ढलान, नमी, जैविक वृद्धि और तापीय प्रसार/संकुचन पत्थर की दीर्घकालिक स्थिरता को प्रभावित कर सकते हैं।
- अनियोजित आधुनिक जोड़: विद्युत, सीमेंट प्लास्टर, टाइल, रेलिंग, साइनबोर्ड और अन्य सुविधाएँ यदि बिना विरासत संबंधी दिशानिर्देश (heritage guidelines) के लगें तो मूल वास्तु-पठन प्रभावित हो सकता है।
- मानव-जनित जोखिम: तीर्थ-आवागमन, स्पर्श, तेल/धूप/रंग, अनियंत्रित सफाई तथा स्थानीय मरम्मत सामग्री का चयन।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- संस्थागत विखंडन: धार्मिक ट्रस्ट, स्थानीय प्रशासन, राज्य पुरातत्व, ASI/अन्य संस्थाएँ और समुदाय—इनके बीच भूमिकाएँ स्पष्ट न होने पर संरक्षण कार्य असंगत हो सकता है।
- डिजिटल अभाव: 3D लेजर स्कैन, फोटोग्रामेट्री, GIS-आधारित स्थल मानचित्र और स्थिति डेटाबेस (condition database) का अभाव भविष्य की तुलना कठिन बनाता है।

प्रस्तावित संरक्षण मॉडल

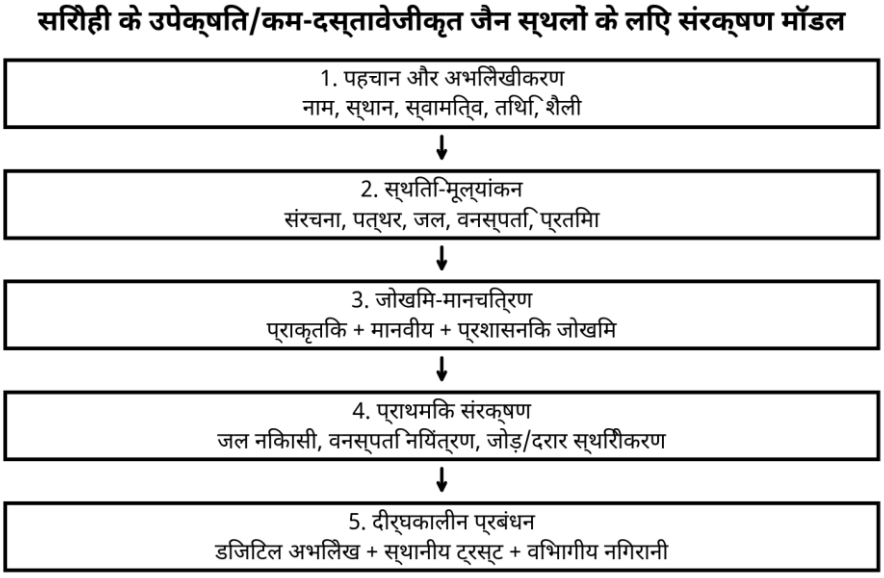

चित्र 9. सिरोही के कम-दस्तावेजीकृत जैन मंदिरों के लिए प्रस्तावित संरक्षण-प्रबंधन मॉडल।

पहला चरण पहचान और अभिलेखीकरण का होना चाहिए। प्रत्येक मंदिर को एक अनोखी हेरिटेज ID (unique heritage ID), GPS कोऑर्डिनेट (GPS coordinate), नाम-परिवर्तन, स्थानीय परम्परा, स्वामित्व, स्थापत्य शैली, निर्माण/पुनर्निर्माण की संभावित तिथि, प्रतिमा-सूची, शिलालेख, सामग्री और पूर्व संरक्षण-हस्तक्षेप से जोड़ना चाहिए।

दूसरे चरण में condition assessment होना चाहिए। इसमें दरारों की मैपिंग (crack mapping), प्लिंथ में सीलन (plinth dampness), छत से पानी की निकासी (roof drainage),पत्थर का खराब होना (stone weathering),जैविक विकास (biological growth), आर्किटेक्चरल हिस्सों का अपनी जगह से हटना (displacement of architectural members) और आधुनिक बदलाव (modern additions) का फोटो-मानचित्र बनाया जा सकता है। यह डेटा केवल एक बार नहीं, बल्कि समय-समय पर अद्यतन होना चाहिए।

तीसरे चरण में जोखिम-मानचित्रण किया जाए। उच्च-जोखिम संरचनात्मक घटकों, जल-निकासी, वनस्पति, मानव स्पर्श/भीड़ और आग/विद्युत जैसे जोखिमों को अलग-अलग दर्ज किया जा सकता है।

चौथे चरण में न्यूनतम हस्तक्षेप की नीति अपनाई जाए। जहाँ संभव हो, मूल पत्थर और पारम्परिक जोड़ तकनीक को प्राथमिकता दी जाए; नए हस्तक्षेप को स्पष्ट रूप से पहचाने जा सकने योग्य, परन्तु दृश्य

रूप से संयमित रखा जाए। किसी भी 'सुंदर बनाने' वाली मरम्मत को संरक्षण का विकल्प नहीं माना जाना चाहिए।

पाँचवें चरण में स्थानीय समुदाय को संरक्षण का भाग बनाया जाए। जीवित जैन मंदिरों में ट्रस्ट, साधु-साध्वी समुदाय, स्थानीय श्रद्धालु और पुरातत्व विशेषज्ञों के बीच सहमति-आधारित रखरखाव का प्रोटोकॉल (maintenance protocol) बनाया जा सकता है। इससे दैनिक उपयोग और विरासत-संरक्षण के बीच अनावश्यक संघर्ष घटेगा।

शोध कमी

सिरोही के जैन मंदिरों पर उपलब्ध साहित्य में एक उल्लेखनीय असंतुलन है। देलवाड़ा और व्यापक जैन स्थापत्य पर समृद्ध कला-ऐतिहासिक अध्ययन उपलब्ध हैं, जबकि सिरोही के छोटे मंदिरों और चन्द्रावती जैसे अवशेष-स्थलों को एकीकृत संरक्षण परिदृश्य (conservation landscape) के रूप में कम अध्ययन मिला है। उपलब्ध IGNCA प्रलेखन इस रिक्ति को भरने के लिए अत्यंत उपयोगी आधार देता है, लेकिन उसका उद्देश्य समान स्तर का समकालीन स्थिति निगरानी (contemporary condition monitoring) उपलब्ध कराना नहीं है।

दूसरा अंतर 'स्थापत्य इतिहास' और 'संरक्षण विज्ञान' के बीच है। किसी मंदिर की शैली, शिखर या मण्डप का वर्णन पर्याप्त नहीं है यदि यह ज्ञात न हो कि संरचना में वर्तमान में कौन-से पत्थर मूल हैं, कहाँ पुनर्निर्माण हुआ, कौन-से भाग बाद में जोड़े गए, और किस प्रकार की मरम्मत पहले की गई।

तीसरा अंतर डिजिटल विरासत प्रबंधन में है। सिरोही के जैन मंदिरों के लिए एक सार्वजनिक, मानकीकृत GIS इन्वेंट्री, 3D मॉडल रिपॉज़िटरी, कंडीशन इंडेक्स और इंटरवेंशन हिस्ट्री उपलब्ध हो तो शोधकर्ता भविष्य में परिवर्तन को माप सकेंगे। इसलिए भविष्य के अध्ययन को अंतःविषय (interdisciplinary) होना चाहिए—पुरातत्व, स्थापत्य इतिहास, संरक्षण इंजीनियरिंग, GIS, पदार्थ विज्ञान और समुदाय-अध्ययन को साथ लाकर।

चौथा अंतर क्षेत्र-सर्वेक्षण का है। इस शोध ने उपलब्ध सार्वजनिक स्रोतों से एक प्राथमिकता-फ्रेम बनाया है, लेकिन वास्तविक 'उपेक्षा' या 'क्षति' का वैज्ञानिक निर्धारण स्थल पर जाकर ही किया जा सकता है। अतः अगला चरण कम से कम 10–15 चयनित मंदिरों का स्थिति सर्वेक्षण (condition survey), फोटोग्रामेट्री, मौखिक इतिहास और सामग्री मूल्यांकन होना चाहिए।

निष्कर्ष

सिरोही का जैन मंदिर परिदृश्य देलवाड़ा की प्रसिद्धि से कहीं अधिक व्यापक है। IGNCA की स्थल-सूची और चन्द्रावती के पुरातात्त्विक साक्ष्य यह स्पष्ट करते हैं कि जैन धार्मिक वास्तु, मूर्तिकला और नगरीय संस्कृति ने इस क्षेत्र में अनेक रूपों में अपनी उपस्थिति दर्ज की। इसलिए संरक्षण नीति का केन्द्र केवल विश्वप्रसिद्ध स्मारक नहीं, बल्कि छोटे, स्थानीय और अवशेषात्मक स्थलों का पूरा नेटवर्क होना चाहिए।

इस शोध का दूसरा निष्कर्ष पद्धतिगत है: 'उपेक्षित' शब्द को सावधानी से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। किसी स्थल के बारे में सार्वजनिक तकनीकी जानकारी कम होना उसके भौतिक रूप से जर्जर होने का

प्रमाण नहीं है। इसी कारण इस अध्ययन ने कम-दस्तावेजीकृत स्थलों को प्राथमिकता के रूप में चिन्हित किया है और वास्तविक क्षति-निर्धारण को भविष्य के क्षेत्र सर्वेक्षण (field survey) के लिए छोड़ा है।
संरक्षण की दृष्टि से सबसे व्यावहारिक रास्ता एक जिला-स्तरीय जैन विरासत प्रलेखन मिशन (Jain Heritage Documentation Mission) हो सकता है, जिसमें प्रत्येक स्थल की unique ID, GPS, फोटोग्राफी, 3D model, स्थापत्य विवरण, प्रतिमा/शिलालेख सूची, स्वामित्व और condition record तैयार हो। इसके साथ वार्षिक निरीक्षण, स्थानीय मंदिर-ट्रस्ट प्रशिक्षण और प्राथमिक आपदा-प्रतिक्रिया योजना जोड़ी जानी चाहिए।
अंततः सिरोही की जैन विरासत को केवल 'तीर्थ' या 'स्मारक' के रूप में नहीं, बल्कि जीवित धार्मिक-सांस्कृतिक और पुरातात्त्विक परिदृश्य के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। ऐसा दृष्टिकोण संरक्षण को मरम्मत की सीमित प्रक्रिया से आगे ले जाकर ज्ञान, समुदाय और स्थान की दीर्घकालिक साझेदारी में बदल सकता है।

संदर्भ

1. हेगेवाल्ड, जूलिया ए. बी. (2002). “राजस्थान और गुजरात में जैन मंदिर वास्तुकला के पहलू।” साउथ एशिया रिसर्च, 22(2), 107–122. DOI: https://doi.org/10.1177/026272800202200201
2. हेगेवाल्ड, जूलिया ए. बी. (2001). “मल्टी-श्राइंड कॉम्प्लेक्स: जैन मंदिर वास्तुकला में स्थान का क्रम-विन्यास।” साउथ एशियन स्टडीज़, 17(1), 77–96. DOI: https://doi.org/10.1080/02666030.2001.9628593
3. सेठ, हंसमुख और खरकवाल, जे.एस. (2025)। "चंद्रावती (सिरोही, राजस्थान) में उत्खनन से मिले जैन साक्ष्य।" इंडिका टुडे. स्रोत: https://www.indica.today/research/conference/jain-evidences-discovered-from-excavations-at-chandravati/
4. राजस्थान देवस्थान विभाग। “मंदिर प्रोफ़ाइल: श्री देलवाड़ा जैन मंदिर।” राजस्थान सरकार। स्रोत: https://devasthan.rajasthan.gov.in/images/Sirohi/delwadajainmandir.htm
5. जिला सिरोही, राजस्थान सरकार। "दिलवाड़ा जैन मंदिर।"स्रोत: https://sirohi.rajasthan.gov.in/pages/district-detail/11166
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA)। “सिरोही: पुरातात्विक स्थल।” स्रोत: https://ignca.gov.in/online-digital-resources/archaeological-sites/rajasthan/sirohi/
7. IGNCA. पुरातात्विक/धरोहर स्थलों/स्मारकों के लिए दस्तावेज़ीकरण प्रारूप, क्रम संख्या RJ/SIR-156, “विमल नाथ जैन मंदिर।” स्रोत: https://ignca.gov.in/asi_reports/rjsir_156.pdf
8. IGNCA. पुरातात्विक/धरोहर स्थलों/स्मारकों के लिए दस्तावेज़ीकरण प्रारूप, क्रम संख्या RJ/SIR-159, “उपसर्ग जैन मंदिर।” स्रोत: https://ignca.gov.in/asi_reports/rjsir_159.pdf
9. IGNCA. पुरातात्विक/धरोहर स्थलों/स्मारकों के लिए दस्तावेज़ीकरण प्रारूप, क्रम संख्या RJ/SIR-259, “आदेश्वर जैन मंदिर।” स्रोत: https://ignca.gov.in/asi_reports/rjsir_259.pdf

10. हेगेवाल्ड, जूलिया ए. बी. (2015). "क्या कोई अंतरराष्ट्रीय जैन शैली है? सोलंकी काल के मारु-गुर्जर मंदिर - पूरे भारत और प्रवासी समुदायों में।" आर्स ओरिएंटलिस, 45. DOI: https://doi.org/10.3998/ars.13441566.0045.005
11. हेगेवाल्ड, जूलिया ए. बी. (2024). भारत में जैन मंदिर वास्तुकला: स्थान और अनुष्ठान में एक विशिष्ट शैली का विकास। हीडलबर्ग एशियन स्टडीज़ पब्लिशिंग। DOI: https://doi.org/10.11588/hasp.1363
12. गुएरीरी, पिलर एम. (2022). "पोस्ट-कोलोनियल भारत में विरासत संरक्षण।" बिल्ट हेरिटेज, 6, 4. DOI: https://doi.org/10.1186/s43238-022-00049-x
13. तलेसरा, प्रियांक; बहुगुणा, अनिरुद्ध; और अन्य. (2021)। "बंदियागढ़, सिरोही, राजस्थान, भारत का पुरातत्व।" ठोस कला एवं मानविकी। DOI: https://doi.org/10.1080/23311983.2020.1870808
14. भाटी, हर्ष वर्धन (2025). "भारत के जयपुर शहर में UNESCO विश्व धरोहर स्थल पर सांस्कृतिक विरासत संरक्षण और ऊर्जा स्थिरता को लागू करना।" Frontiers in Sustainable Cities, 7. DOI: https://doi.org/10.3389/frsc.2025.1548279
15. कुमार, सहदेव (2001). राजस्थान के जैन मंदिर. IGNCA / अभिनव पब्लिकेशन्स. (द्वितीयक ग्रंथ-संदर्भ; DOI उपलब्ध नहीं).